#४०: मानवीय व्यवस्था-२

दिनांक -१४/१२/२०११

दस सोपानीय परिवार मूलक व्यवस्था ही परिवार मूलक स्वराज्य व्यवस्था, विकल्प विधि से समझ में आता है | जंगल युग से आधुनिक युग, आधुनिक युग से अत्याधुनिक युग तक, अत्याधुनिक युग में निर्वाचन प्रक्रिया को स्वीकारा गया है | निर्वाचन प्रक्रिया ठीक है | उसमें प्रावधानित अथवा प्रक्रिया में प्रावधानित आशय गलत हो गयी "वोट देते समय वोटर गलती नहीं करता" इस आशय के साथ | सम्पूर्ण शक्ति का प्रयोग बारूद से लेकर प्रक्षेपण तक, प्रक्षेपणास्त्र के मूल में विध्वंसात्मक कार्यों को सम्पन्न करते तक में हुआ | इसमें नियोजित ऊर्जा प्रवृत्ति ही संसार के लिये संकट कार्य हो गया है | इसमें नियोजित नाभिकीय तंत्रणा, प्रक्षेपणास्त्र सफल होना पाया गया है | नाभिकीय परीक्षण इस धरती पर लगभग तीन हजार बार हो चुका है | इन सब प्रयोगों में ताप का ही आंकलन होता है | यह ताप, सूर्य में जो ताप है मानव कल्पना के अनुसार, उतना होने पर नाभिकीय ताप माना जा रहा है | इन्हीं ताप के आधार पर सभी प्रेक्षपास्त्र का प्रयोग विभिन्न नामों से विभिन्न देशों में प्रायोजित हो रहा है | नाभिकीय तत्वों को अर्जित करना धरती से ही सम्भव हुआ है | इसके संग्रहण से धरती बीमार होना और इनके प्रयोग से उसमें बढोत्तरी होना देखा गया है | इसी को वैज्ञानिक देश का विकास मान रहे हैं | इसी के साथ साथ खनिज तेल, खनिज कोयला ऊर्जा स्रोत के रूप में समाहित है | इन सब में उत्पन्न ताप धरती में ही समायी रहती है | धरती तापग्रस्त होना, धरती में ऋतु असंतुलित होना, धरती बीमार होना स्वाभाविक रहा है | इसमें ऋतु असंतुलन से जीव संसार में परेशानियां बढ गयी | जो जीव जिस ऋतु में जीता रहा, उस ऋतु में परिवर्तन होने पर या उससे भिन्न होने पर जीव संसार में संकट बढ गया | इसका मुख्य कारक मनुष्य ही रहा |

मानव जात ज्ञानी, विज्ञानी, अज्ञानी के रूप में गण्य है | प्रायःसभी समुदायों में यह गणना प्रमाणित है, परम्परा में स्वीकृत है | इन तीनों प्रजाति में गण्य मानव ही जंगल का सफाया करने में, खनिज वस्तुओं का सफाया करने में, इसका उपयोग प्रयोग से विकृतियों को पैदा करने में,समर्थ इकाई के रूप में देखा गया है | इन तीनों प्रकार के ऊर्जा स्रोतों का उपयोग न कोई जीव जानवर करता है और न प्रयोग करता है | उपयोग कार्य में माहिर वस्तु के रूप में मानव ही गण्य है | इस क्रम में सभी अपराध का आधार मानव ही बना | भौतिक, रासायनिक वस्तुओं में असंतुलन का आधार मानव कृत्य के आधार पर निर्भर हुआ | इसमें सुधार की आवश्यकता बनी रही | इसी क्रम में चेतना विकास मूल्य शिक्षा विधि शिक्षा रूप में प्रस्तुत है जिसमें पारंगत व्यक्ति ही विकसित चेतना विधि से जीने में समर्थ होता है | ऐसी शिक्षा लोकव्यापीकरण होने से मानव अपराधमुक्त, भ्रम-मुक्त होना तथा समाधान, समृद्धि, अभय, सह-अस्तित्व पूर्वक जी पाना प्रमाणित होता है | ऐसे मानव का अत्यधिक संख्या में होना ही मानव से मानव का विश्वास, एक समुदाय का दूसरे समुदाय के साथ विश्वास होना है | देश कालीय विधि से भौगोलिक जलवायु प्रक्रिया से अनेक समुदाय रहना अनुमानित है | उक्त समुदायों में समझदारी का अर्हता चेतना विकास मूल्य शिक्षा विधि से बोधगम्य हो जाता है | ऐसी अर्हता प्रकृति प्रदत्त है | प्रकृति प्रदत्त होने के तात्पर्य में यह देखा गया, समझा गया है कि व्यापक वस्तु रूपी सत्ता में सम्पृक्त प्रकृति ही सम्पूर्ण अस्तित्व है | सम्पूर्ण अस्तित्व ही विकास क्रम-विकास, जागृति क्रम- जागृति के रूप में होना अध्ययनगम्य होता है; जिसके फलस्वरूप ही चारो अवस्थाओं में विकास क्रम में भौतिक, रासायनिक वस्तुएं और विकसित रूप में जीवन वस्तुओं का होना पाया गया है | यही तीन मुद्दा अध्ययन का मूल तत्व है | यही विकल्पात्मक अध्ययन का तात्पर्य है | यह मध्यस्थ दर्शन से ही संभव हुआ है | अन्यथा नहीं है | ऐसा जो अध्ययन करते हैं वही

विकसित चेतना विधि से जीने का अधिकारी बनते हैं | विकसित चेतना ही मानव चेतना, देव चेतना, दिव्य चेतना के रूप में प्रमाणित होते हैं | देव चेतना, दिव्य चेतना विधि से ही अखण्ड समाज, सार्वभौम व्यवस्था प्रमाणित हो जाता है | यही मानवीयतापूर्ण आचरण पूर्वक ही होता है |

अखण्ड समाज में भागीदारी करते समय देव चेतना, दिव्य चेतना प्रमाणित हो जाता है | इन सभी सम्बन्धों को देखने पर पता लगता है कि अभी तक मानव जात आदर्शवादी विधि से, भौतिकवादी विधि से जीने का अभ्यास किया है और प्रयोग किया है जिसके फल परिणाम में धरती बीमार होना मिल गया | मानव इस पक्ष का अध्ययन नं कर पाया | यही गतिविधियाँ आगे सोचने के लिये मजबूर किया है | सोचने का अधिकार हर मानव में समाहित है | इसी क्रम में आदर्शवादी विधि का अध्ययन किया, सोच- विचार में लाया, कमयां दिखने से अनुसंधान में लग गया | मानव के पुण्य से इसमें सफल हो गये, ऐसा मैं मान लिया | मानव को अर्पित करने के क्रम में अखण्ड समाज, सार्वभौम व्यवस्था का अध्ययन करना रहा | इस अध्ययन में परम्परा विधि से निर्वाचन विधि को अपनाया गया है | प्रक्रिया भिन्न रूप में है | विकल्पात्मक निर्वाचन विधि, परिवार विधि से हुई | परिवार में १० व्यक्तियों का होना मान लिया गया है | ये १० व्यक्ति समझदार होना माना गया है | हर परिवार में १०-१० व्यक्ति समझदार होना स्वीकारा गया है | इसमें से पारंगत व्यक्ति ही परिवार में अर्थात १० व्यक्तियों के परिवार में से दूसरी भाषा में नर-नारियों में से एक व्यक्ति को निर्वाचित करेगा |

इसमें न तो भाषणबाजी है, न ही प्रचार के लिये कोई खर्च; ध्वनि प्रदूषण, प्रदर्शन कृत्य से भी मुक्त रहना पाया जाता है | इस क्रम में निर्वाचित व्यक्ति ही व्यवस्था में अथवा अखण्ड समाज, सार्वभौम व्यवस्था में अथवा मानव चेतना सम्पन्न मानवीय व्यवस्था में पारंगत होना पाया जाता है | ऐसा परिवार का सीमाओं को ऐसा समझा गया है कि पहला १० समझदार व्यक्तियों का परिवार, दूसरा १० समझदार व्यक्तियों का परिवार में से निर्वाचित व्यक्तियों का संगठित परिवार समूह सभा के रूप में होगा | परिवार विधि से मानव संस्कृति, सभ्यता का धारक- वाहक है | धारकता का मतलब समझने की विधि सम्पन्नता से है | वाहकता का मतलब प्रमाणित करने का अधिकार सम्पन्नता से है | यह सर्वमानव में होने वाली प्रकृति प्रदत्त महिमा के रूप में देखा गया है | इस क्रम में पहली निर्वाचित सभा का नाम परिवार समूह सभा है | ऐसा १० परिवार समूह सभा से निर्वाचित १० व्यक्ति, ग्राम/मोहल्ला परिवार सभा को गठित करेगा; जिसके अंतर्गत ५ समितियां कार्य करेंगी | पहला शिक्षा-संस्कार समिति, दूसरा न्याय-सुरक्षा समिति, तीसरा उत्पादन कार्य समिति, चौथा विनिमय-कोष समिति, पांचवा- स्वास्थ्य-संयम समिति के रुप में होगा | इन सभाओं के कार्यकर्ताओं का चयन, ग्राम/मोहल्ला परिवार सभा जो १०-१० होंगे , उनकी संयुक्त सहमति से सम्पन्न होगा | इस प्रकार हर सभा के साथ पांच समितियां आठ सभाओं में रहेंगी |

आठ सभाओं का पहला सभा ग्राम परिवार सभा या मोहल्ला परिवार सभा ही है | इसके पहले दो सभा १-परिवार सभा २- परिवार समूह सभा में प्रवृतियों के आधार पर कार्य व्यवहार करता रहेगा | तीसरा सभा ऐसे ग्राम/मोहल्ला, परिवार सभा से निर्वाचित १०-१० सदस्य होंगे जिसका नाम ग्राम/मोहल्ला परिवार समूह सभा के रूप में पहचाना जाता है | ऐसा १०-१० ग्राम समूह परिवार सभा में से निर्वाचित सदस्यों का संयोग से क्षेत्र परिवार सभा सम्पन्न होगा | ऐसा १०-१० क्षेत्र परिवार सभा से मंडल सभा निर्वाचित होगा | ऐसा १०-१० मंडल सभा, मंडल समूह सभा को गठित करेगा और कार्य करेगा | ऐसे १०-१० मंडल समूह परिवार सभाओं से निर्वाचित १०-१० प्रतिनिधि एक मुख्य राज्य सभा का गठन करेंगे | ऐसे १०-१० मुख्य राज्य परिवार सभाएं १०-१० संख्या में से एक-एक निर्वाचित सदस्य एक प्रधान राज्य सभा का गठन करेगा | इसी क्रम में १० प्रधान

राज्य सभा सदस्यों में से एक-एक व्यक्ति को निर्वाचित किया जाता है | वही विश्व राज्य सभा का गठन करेगा | इस प्रकार से परिवार विधि से, हैसियत से मानव संस्कृति, सभ्यता का धारक- वाह्क तथा सभा विधि से विधि व्यवस्था का धारक- वाहक है | इस विधि से सम्पूर्ण देश कालीय मानव में से अखण्ड समाज सार्वभौम व्यवस्था की सम्भावना समीचीन है: इसे सार्थक बनाने का, मौन रहने का और विरोध करने का अधिकार सम्पन्न ह- यह कहते हुए प्रसन्नता का अनुभव कर रहा हूँ | मानव जात सुधर सकता है, सुखपूर्वक रह सकता है | यही मेरा नम्र निवेदन है |

सर्वशुभ हो! जय हो! मंगल हो! कल्याण हो!

- ए. नागराज, अमरानकट